बढ़ रहा तापमान, पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है

RIO NEWS24 4 hours ago कृषि, समाचार

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शाकभाजीअनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे शाकभाजी सस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रुप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे। जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा।

डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 19:19 :19 का 1.5 से 2% घोल का पर्णीय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूक्ष्म पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूक्ष्म पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्णीय छिड़काव कर सकते हैं। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा ,करेला,तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट,एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्ट्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं। सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है।जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है।खीरा की पार्थेनोकर्पिक प्रजाति जैसे पूसा,बीज रहित खीरा- 6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं न जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।

aman yatra.pdf

कानपुर देहात एंव गुजरात से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र
डी ए वी पी (भारत सरकार) से विज्ञापन प्रकाशन हेतु मान्यता प्राप्त

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

अमन यात्रा

कानपुर देहात,
सोमवार, 05 अप्रैल, 2021
वर्ष: 06 अंक: 190
मूल्य: 1+1=2 रू
पृष्ठ: 8
R.N.I.NO.
UPHIN/2015/64600

8707095473

www.amanyatralive.com, www.amanyatra.in

गर्मी के मौसम में सब्जियों की संरक्षित खेती में समसामयिक क्रियाएं आवश्यक

अमन यात्रा ब्यूरो

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के साक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साक भाजी सस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया।कि तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रुप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फेगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे।जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 19:19:19 का 1.5 से 2 ग्रोल का पर्णीय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूचक्षम पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूचक्षम पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्णीय छिड़काव कर सकते हैं। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा ,करेला,तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट,एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्ट्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं।तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है।जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है।खीरा की पार्थेनोकर्पिक प्रजाति जैसे पूसा,बीज रहित खीरा- 6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैंन जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • सोमवार • 5 अप्रैल • 2021

सीएसए कृषि विवि के वैज्ञानिकों की सलाह

गर्मी से फसलों को बचाने के लिए करें सिंचाई

बढ़ते तापमान से हो सकता है संरक्षित ढांचों के अंदर फसलों को नुकसान

तापमान नियंत्रित करने के साथ ही भूमि में नमी बनाये रखना जरूरी

कानपुर (एसएनबी)। संरक्षित ढांचों में उगाई जाने वाली सब्जी फसलों में विशेष कर टमाटर व शिमला मिर्च में फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन व फल विकास की प्रक्रिया साथ-साथ चलती है। इसलिए इन्हें बढ़ते तापमान के प्रकोप से बचाना जरूरी है। इसके लिए आवश्यक है कि निरंतर सिंचाई करते रहें तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोकर उपकरणों का प्रयोग भी करते रहे। जिससे ढ़ांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा।

संचित सब्जी फसलों में साथ साथ चलती है पुष्पन व विकास प्रक्रिया। फोटो : एसएनबी

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के साक भाजी अनुभाग कल्याणपुर स्थित सब्जी उत्कृष्टता केन्द्र में फसलों की संरक्षित खेती पर शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ.राज़ीव ने शोध के नतीजों के आधार पर उक्त सुझाव दिये हैं। उन्होंने एन.पी.के 19:19:19 का 1.5 से 2 फीसद घोल का पर्णीय छिड़काव करने तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करने की बात कही है, ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। पौधों को हरा-भरा बनाये रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिनों के अंतराल पर सूक्ष्म पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव भी किया जाना चाहिए। डॉ.राजीव के अनुसार पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचो के अंतर्गत वर्तमान समय में खीरा, करेला, तरोई आदि लता वर्गीय फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार करके प्रोन्द्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं। सामान्यता लगभग 20 से 22 दिनों में पौधे रोपाई के लिए तैयार हो जाते है। खीरे की पार्थेनोकर्पिक प्रजाति जैसे पूसा, बीज रहित खीरा-6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं, जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं। इन प्रजातियों के उपयोग से अच्छी उपज होने से किसान बेहतर आय प्राप्त कर सकते हैं।

हिन्दी दैनिक

R.N.I.No-UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

● वर्ष : 9 ● अंक 331 ● कानपुर सोमवार 5 अप्रैल, 2021 - पृष्ठ: 8 - मूल्य: 1.00 रु.

गर्मी के मौसम में सब्जियों की संरक्षित खेती में समसामयिक क्रियाएं :डॉ राजीव

कानपुर-चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के साक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रुप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फ्रेगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 19:19 :19 का 1.5 से 2त्न घोल का पर्णीय छिड़काव करेंतथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें ताकि पौधों को नियमित रुप से खुराक मिलती रहे उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूक्ष्म पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा यदि सूक्ष्म पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्णीय छिड़काव कर सकते हैं डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा, करेला,तरोई आदि लता वर्गीफसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट,एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्द्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है खीरा की पार्थेनोकर्पिकप्रजाति जैसे पूसा, बीज रहित खीरा- 6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैंन जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैंतथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं

मौन पालन हेतु संगोष्ठी एवं प्रशिक्षण का आयोजन तथा मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण एवं संवर्धन विषय पर परियोजना का संचालन

कानपुर (कर्म कसौटी साप्ताहिक)। चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के राष्ट्रीय मौन बोर्ड द्वारा कीट विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ.वाई.पी.मलिक को वैज्ञानिक मौन पालन हेतु संगोष्ठी एवं प्रशिक्षण का आयोजन तथा मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण एवं संवर्धन विषय पर परियोजना का संचालन किए जाने की स्वीकृति मिलने के बाद यह योजना विश्वविद्यालय के सभी जनपदों में संचालित होने जा रही है। डॉ. मलिक ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.डी.आर.सिंह और डॉ.राम सिंह उमराव के नेतृत्व में चलने वाली योजना के लिए बोर्ड से अभी 3 माह के लिए 9 लाख 6 हजार रुपए स्वीकृत किए गए हैं इस योजना का मुख्य उद्देश्य कृषकों को आत्मनिर्भर बनाना और उनकी आय को बढ़ाना है।

उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन कम खर्चीला और घरेलू उद्योग होने के साथ ही आय, रोजगार, कृषि और बागवानी उत्पादन बढ़ाने तथा वातावरण को शुद्ध बनाने की क्षमता रखता है। आजकल मधुमक्खी पालन कम लागत वाला कुटीर उद्योग है जो विश्वविद्यालय कार्य क्षेत्र के ग्रामीण, भूमिहीन, बेरोजगार तथा कोविड–19 के कारण अपने घरों को वापस लौटे प्रवासी श्रमिकों के लिए यह एक आमदनी का अच्छा स्रोत होगा।

बढ़ते तापमान पर सब्जियों की संरक्षित खेती में कृषक सिंचाई पर दें विशेष ध्यान

कानपुर। सीएसए के साक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ राजीव ने बताया गया कि तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रुप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 19:19:19 का 1.5 से 2ग्रा घोल का पर्णीय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी

में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर मार्गरिका का पर्णीय छिड़काव कर सकते हैं। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा ,करेला,तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट,एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर ट्रेन्दे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है खीरा की पार्थेनोकर्पिक प्रजाति जैसे पूसा,बीज रहित खीरा- 6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।

लखनऊ संस्करण
सोमवार, 05 अप्रैल, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु.
देश का सबसे विश्वसनीय अखबार
दैनिक भास्कर
For epaper → www.updainikbhaskar.com

बढ़ते तपमान पर सब्जियों की संरक्षित खेती में कृषक सिंचाई पर दें विशेष ध्यान

- पाली हाउस व नेट हाउस संरक्षित ढांचों के अंदर लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे या नर्सरी तैयार करके की जा सकती है : डॉ. राजीव

भास्कर न्यूज

कानपुर। सीएसए के साक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ राजीव ने बताया गया कि तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रूप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे।जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 19:19 :19 का 1.5 से 2% घोल का पर्णीय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्णीय छिड़काव कर सकते हैं। डॉ. राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा ,करेला,तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाइट,एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्ट्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं।तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है।जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है।

अमर उजाला
सोमवार • 05.04.2021
kanpur.amarujala.com

संरक्षित खेती के लिए एडवाइजरी जारी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शाकभाजी अनुभाग कल्याणपुर के डॉ. राजीव कुमार ने सब्जी की खेती करने वाले किसानों को संरक्षित खेती के लिए रविवार को एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि बढ़ता तापमान टमाटर और शिमला मिर्च की फसलों में फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। ऐसे में किसान निरंतर सिंचाई करते रहे। पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूक्ष्म पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव करें। (संवाद)